
श्रीगणेशाय नमः ।
लक्ष्मीवेंकटेश्वर छापाखाना.

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

अथ

रंगत खडी ख्याल.



चेतन बीज और मूलब्रह्म है तीन त्रियेगुन टहनीकुल ॥ अष्ट जाम है साखपत्र हैं लखचौरासी साधूगुल ॥ टेक ॥ ज्ञानका पानी लगा ध्यान धरतीमें उसको बोतेहैं ॥ सतसंगतकी लगा पोर्दीमें लोभका जाला खोतेहैं ॥ सत्य शील गोफीयेसें उडते काम क्रोधके तोते हैं ॥ जोग जुगतकी चारों तरफ बैराग बाडको गोते हैं ॥ विद्यावान गुणवान पुरुष है संतोंके सेवक बुलबुल ॥ अष्ट जाम है०॥ १ ॥ ममता मायाकी डीमक उस शजरको अक्सर लगती है ॥ प्रेम सारा सीचनेसें फिरवो चित्त चीटीसे भगती है ॥ सोह मालीकी अवाज सुन सुरता मालन जगती है ॥ दोनों मिलके आपसमें करती रखवाली भक्ती है ॥ मोक्ष अमरफल लगे

शजरके कोस मरे नहीं उनके तुल ॥ अष्ट जाम है० ॥ २ ॥ विचारके बागमें शजर है और किसी जानहीं बुया ॥ क्षमा शील संतोष दरोंपै चौथे दरपे रहे दया ॥ जो पहरेवालोंसे मिलगया वो तो बागमें चला गया ॥ शब्दका सतगुरु मिला रहनुमा तोतर वर ढूंढ लिया ॥ पंडित वक्ता तयार हैं क्या विना शजरके करते गुल ॥ अष्ट जाम है० ॥ ३ ॥ जमनासिंहने शजर लगा फल खाया है ॥ गुब्दीसिंह कहै उसी वृक्षकी त्रिलोकीमें छाया है ॥ उमरावसिंह बदरीदत्तके छंद नुगरा सुन दह लाया है ॥ दिब्ब आँखसें देख वृक्ष फिर तुमको हाल सुनाया है ॥ कथक हे शजर शंभूदयाल विन देखे लोगुने कहे बिल्कुल ॥ अष्ट जाम है० ॥ ४ ॥

ख्याल अधर रकारको चौअंग.

खडी रंगत.

राजी हैं राजिककी रजासे जिन्ने रचाया

ये संसार ॥ राख लिये टटीरीके अंडे गज-
का घंट दिया गरसे डार ॥ रखी टेक किया
अनंत चिरजी हरने जान अर्जुनकी नार ॥
राज दिया नानाने राजीसे असुर दल डाले
सिंहार ॥ रणअंदर चंदेरीका राजा कतल
कियेथे कई हजार ॥ रगडा गया था जरा-
सिंध सारा साथ कंसके हता खिलार ॥ रही
धरी ना शिला अहिल्या आके हरीने दई थी
तार ॥ राख लिया० ॥ १ ॥ रहा नहीं थिर
दशकंधर जिसका नजीक आकर लगा
करार॥रथके नीचे खर लगते थे कर गिन-
ती क्या कई हजार ॥ राह नरकी दशा लगी
जद जरी लंक आकेदी जार ॥ रार करे खर
इंद्रजीत हरसें जीते नहीं गयेथे हार ॥ रानी
संग निश्चरके जरीदसकंधर जोधा दई लल-
कार ॥ राख लिया० ॥ २ ॥ रती रानी किस-
की है जीताना ताराका गिनकहै सिंगार ॥
रही है कन्या कितनी तिर्या करल्या जितनी

जद् जाने सार॥ रत्नागिरकी लडकी जल्दी किसने करीथी अंगीकार ॥ रत्नदिये करसे करदान कर कर तलाश दई कितनी कतार ॥ रही कितने दिन सिया असुरघर जल्दीसें देना इजहार॥ राख लिया० ॥ ३ ॥ रात दिन हर नंदराय गंगासिंह गिगन दीया आसन डार ॥ रतनलाल हरिचंद कहैं कल-गी चंदनेका करे करार॥ रहे है हर नागने सीराजी कृष्णचंदका रखे अधार ॥ रगके नीचें सत कलगीका अंजी डाला जी चीर चार रंजन॥ कर कहे हरना जीता रांड क-लगीके डार खखार राजी है ॥ राख लिया० ॥ ४ ॥

बेमात्रा–दिंड खडी रंगत.

मत कर हट रट खन खन हर हर भज दंपर भज दंपर दम्र ॥ टेक॥ दंभर मत तज भज नर हर सकल अलग कर जगत भरम्र ॥ भरमत कस नर भजन करत नर करत

लगत अधरम् ॥ अधरम मत कर करक-
चत धरम ॥ भजदं० ॥ १ ॥ धरम करत जब
तरत भगत जन भगवत भगत कर जम
जम ॥ जमन रहत कर मरण सम उर डर
धरत कदम् ॥ कदम डर डर धर नर करत
सरम् ॥ भजदंप० ॥ २ ॥ सरम करत छल
करन सकत खल कहत भगत घर कठन
अगम् ॥ अगम अनल नल मद जर जर
नर सब तन करत भसम ॥ भसम करत सब
तन सत धरम परम् ॥ भजदंपर० ॥ ३ ॥
परम तत्व हर भजन भगत नर दृढ कर गह
कर कर्म अकरम् ॥ अकर्म तज भज ब्रज
नर हर हर रतन कथत पदब्रह्म ॥ ब्रह्महर
घट घट झलकत रम रम ॥ भजदं० ॥ ४ ॥

दिंड-खडी रंगत.

गिगनपे बदरी देखी कारी ॥ पिया बिन मैं
दुखयारी ॥ टेक ॥ बरसता छुंछुंमे हा प्यारी
पी रहे परदेशा छारी ॥ किसी सौतनने लिये

बिलमारी ॥ मुझे पिया मिले इस बारी ॥ दोहा ॥ चमक पडी सेजपर अकेली ऐसा आया ख्वाब ॥ खुली आंख ना पाये पीय फिर जारी चश्मसे आब ॥ पलंगसें उठी गुस्सा खारी ॥ गिगनपे बदरी० ॥ १ ॥ चढी थी जिसदं मैं अटारी ॥ लंबे केस फलारी ॥ दामनी दंके और अंधियारी ॥ रहा इंदर झडलारी ॥ दोहा ॥ मैं पिय विन दुखिया पडी कहो सखि कौन जतन कीजे ॥ पिया रहे परदेस छाय अब जीकर क्या कीजे ॥ जहर विष खाऊँ या कटारी ॥ गिगनपें बदरी० ॥ २ ॥ नदी और नालेसब है जारी ॥ सावन तीज त्युंहारी ॥ हिंडोले झूले नर और नारी ॥ देख अंबकी डारी ॥ दोहा ॥ घर घरमें सब कामनी ऐजी केल करे माती ॥ मैं पी विन दुखिया पडी रात दिन जले मेरी छाती ॥ बोल कोयलका लगते खारी ॥ गिगन० ॥ ३ ॥ कहे गंगासिंह रंगत न्यारी ॥

जरगर आज निकारी ॥ रामजीवनकी गये बलिहारी ॥ प्रभु दयाल गिरिधारी ॥ दोहा ॥ आन मिला सुंदरका साज खूब किया था रंग ॥ डाल गलेमें वाथ नाजनी सोई पियाके संग ॥ होई खुशयाली कहे मुरारी ॥ गिगनपे बदरी ॥ ४ ॥

नकारका दुअंग दिंड खडी रंगत.

न कर घमंड गानेका गुनी एक पलमें तेरा मारुं मान॥नरमाईसें कभी न बोले बडबड के रहा काढ जबान॥निकाल दीया टांग तलेंसे कई दफे सैतान ॥ नाजनीपनमें लिया लूट जहान ॥ १ ॥ नौकरथे हं तेरे दमके हुए फिरे थे जब कुरबान ॥ नक्श हो रहा दिलपे अबतक सुनो लगाके कान ॥ नहीं हूं जूदा तेरमें बसे पिरान ॥ २ ॥ नुगरोसें नहीं काम हमारा ज्ञानीसें गाते हैं ज्ञान ॥ नर्द आपकी पिटे सभामें करो इश्वरको ध्यान ॥ नुकते मतलबके कहुं पिछान ॥ ३ ॥ नसीबवर हुए

गंगासिंह गये स्वर्गधामको चढके विमान ॥ निर्भय होके हाथ धर दिया गुन्दीसिंहको ज्ञान॥निर्गुन पदको गाव उमराव जवान४॥

कबित्त.

काटनमै वास हुआ नामका प्रकाशको हूं पंडित अगादनेका कहके दरसायो है ॥ चंद्रमा मलीन कभी बडे कभी होय छीन वो संग वाके लगावोभी शरमायो है ॥ जवाहरको विसार जुवारका सत्कार किया या जौहरीके आगे अकल आंसूं डरकायो है ॥ काक नहीं दीषे पास हंससा पडाथा भास याते कवी चैन सुखने आधोको खायो है ॥ १ ॥

रंगत लंगडी.

श्रीकृष्णनंदजीके नंदा त्यार हुए बरसानेकोवन मनहारी अरे मन चल चुरियां पहानानेको॥टेक॥ धरा अप्सरारूप कृष्णने कर सोला सिंगार किये ॥ बत्तीस अभरन सीससें पैरतलक सब पैन लिये ॥ माथे बिंदा लाल-

मोती बाल बाल पचलडी पडी हिये ॥ सांवरी सूरत माधुरी मूरतने शशि लजादिये ॥ मस्तक भरा सिंदूर पूर कर कजरा लगे लगानेको ॥ बन मनियारी० ॥ १ ॥ पैन सोसनी दावनका मन साँवरी नार सुरख चोली ॥ चिट्ठी चादर जाय श्रीराधेके द्वारे बोली ॥ सुंदर बंगडी है गी रंगीली सब चुरिये हैं अनमोली ॥ पैनूं कोई मुखसें बातें करती भोली भोली ॥ राधा कहे ये कैसी चुरियां जब कृष्ण लगे दिखलानेको ॥ बन नियारी० ॥ २ ॥ देख बंगडी राधे कहती मनहारन हो आज यहीं ॥ पैने सखियां बनी है भली इनमें कुछ फेर नहीं ॥ कोईको सखियां पैने चुरियां ऐसी नहीं मिले कहीं ॥ कोई बडाई बडाई करें कृष्णकी पैन रही ॥ कोई कोई सखियां पैने चुरियां कोई लगी ठैरानेको ॥ बन मनियारी० ॥ ३ ॥ सखियोंमें नहीं कोई सखीरी ऐसे अच्छे कान बने ॥

राधा कहती अरी मनहारन मेरे रहो कने ॥ मेरी तेरी प्रीत आजसे हमे नहीं कोई करे मने ॥ लक्षमन भारतख्याल कहे जमनासिंह प्रेममैं सने ॥ नत्थूसिंह छतूसिंहजी लगे राधा कृष्ण मनानेको ॥ बन मनियारी० ॥ ४ ॥

मकारका दुअंग--रंगत लंगडी.

मसला एक पूंछूंगा आपको बतलाना होगा सरेआम ॥ मतलब क्या है इसमें जो बता पिया मुर्शदका जाम ॥ मकासें अपने चलके सरवन फिर आया पृथ्वीपें तमाम ॥ मंजले मंजल चलके फिर न्हूला दिये थे अठसठ धाम ॥ मंद्र देख ठाकुरका सरवन वहांही जा करता विसराम ॥ मजे मजेकी सुनाता बात बना खिदमत मैं गुलाम ॥ माला उनीकी फरै सर्वन आठ पहर जपता हरनाम ॥ मतलब क्या० ॥ १ ॥ मेह और कांटे सहे बहुत स्या हुआ धूप लगलगके घाम ॥ मज नूंसेभी दीवाना हुआ फिरा नहीं किया अ-

राम ॥ मगरूरी नहीं लाया लिये लिये फिरा उने वो सुबे और श्याम॥ मतका गाढा सुनो जी धरूंसे जादा पाया नाम ॥ मजहबसे हो भेदी मुझे गिन गिनके बतलावो बारा इमाम ॥ मतलब० ॥ २ ॥ महानकारी जमी बता जहां खडा हुआ कांवडको थाम ॥ मुकर गया वो पितासें करने लगा फिर सख्त कलाम ॥ मतका हीन हो लगा कहने मुझे भाडेका लिख दो इष्टाम ॥ मैं नहीं समझूं छोडके चला करी झूकके परनाम ॥ माता उसकी कहे यहांसे ले चल मूमांगे दूं दाम ॥ मतलब० ॥ ३ ॥ मैं तो पिसाई मेरी रे सर्वन लगी प्यास बन फल खा आम ॥ मुझे पिलावो पानी कहीं कुवा वाय दिखता हो चाम ॥ मर्जी हुई भगवतकी सर्वन मारा गया गंगाके ठाम ॥ मरतेही सर्वन उचारा निजमंतर मुखसेंती राम ॥ मुर्शद कहे गंगासिंह आज निगुरोंकी पुस्तपै लगाया डाम॥ मतलब० ॥ ४ ॥

रंगत शिकस्ता मकारका दुअंग.

मिले अगर महबूब कही पे वख्तसैरके खिराम कर्ता ॥ मजाल क्या कह सके कोई उफ अगर कलगीसे हराम कर्ता ॥ मिसाले मजनू हुआ इश्कमें दिवाने कैसा कलाम कर्ता॥ मोहल्ले कुंचे बजारमेंभी मुलाकी हो तो सलाम कर्ता॥ मुकिन नहीं है देखके उसको कबाब दिलखुद बहराम कर्ता ॥ मरे न आशक क्यौं उसके ऊपर न हंसरी कोई इजराम कर्ता ॥ मुलाकातहीकी आरजूमें ये दिलसें उल्फत मुदाम कर्ता ॥ मजाल क्या कह सके० ॥ १ ॥ माहो मेहर कर्ता तवाफ क्यारटन तेरा आठो जाम कर्ता ॥ मगर अवर बारांये हिज्रमें रोके दिलरुबाका नाम कर्ता ॥ मलिक बशर जिनो हुर गिलमाठेजां अंदागर वो आम कर्ता॥ मारे सियाका वीमन फसाथा जुल्फ कटीलीका दाम कर्ता ॥ मौज मगर नजरेकहर होती उलट

पलट रुमै श्याम कर्ता ॥ मजाल क्या कह सके० ॥ २॥ मोहबतसें प्यारेके यार आविदभी काफरोंका काम कर्त्ता ॥ मुखत्यार दिलवर है वो दिलोंका जो चाहे सोई दवाम कर्ता॥मुश्किल नहीं आलमे शकूत आलीम मै कही गर मुकाम कर्ता ॥ मैके प्याले है चश्म नरगिस नरीस उसकी बदाम कर्ता॥ मुद्दतसें गिनागिन घडिये हर रोज सुबेसे वो स्याम कर्ता ॥ मजाल क्या० ॥ ३ ॥ मुर्शद जनासिंह मेरे मैं सर दुश्मन अब तमाम कर्ता ॥ मालोमअलुम होते गुल्दीसिंहके तो पेश्तर इतजाम कर्ता ॥ मुकावले मैं उमराव सिंहके क्या तुंदहकानीयेखामकर्ता ॥ मातकर्के बदरीदत्त तुझको जरूर अपना गुलाम कर्ता ॥ मशूक छोडकर नफर दिवाने कह शंभू तूं चारों धामकर्ता ॥ मजाल क्या०॥४॥

रंगत.

तडफ रहा हूं न छोड बिसमिल अजाब

तेरे सबाबमे है ॥ सिसक्ता रहेगा पडा नीम-
जां सबाब्नत तुझको अजाबमें है ॥ निगाह
तिर्छी का तीर मारा वो चश्मका तिल न का
बमें है ॥ जो दिलसे दिल मिल गया दिलरु-
बां तो फिर धरा क्या हजाबमें है ॥ आरिज-
गुलगूंका रंग असान रंगरंगी गुलाबमें है ॥
गमे जुदाईसे टपके गोहर ये वरुफ चश्मे
पुराबमे है ॥ खूने जिगरमें जो अब मजा है
नहीं जान किसी शराबमें है सिसक्ता रहेगा
॥ १ ॥ ये तेग अबरूमे तेरे जो हर नहीं वो
कारिद कसावमें है ॥ चमक हुसनकी फल-
कके ऊपर न जाना वो माहेताबमें हैं ॥ हैं
नाफका तिल वो तेरी ऐसी ये दिल तोडुं
बागरदावमें है ॥ बहरे इश्कमें मशूर वह-
गया मेरी जान किस हुबाबमें है ॥ जलेगा
अलम मेरी आहसें नये तेजी आफताबमे
है ॥ सिसक्ता रहेगा० ॥ २ ॥ इश्कका दफूर
लिखा जो मन नहीं रिसाले किताबमें है ॥

लाले बद खशाँ होवे शरमगी वो लाली तेरी लुआबमें है ॥ हुआ खूब मालूम महलका तुझे मजा दिल कबाबमें है॥ इसी लिये जान जाना मैंने रखा हथेलीके काबमें है ॥ न चैन है बेचैन पडा हूं नहीं ताब मुझ बेताबमें है॥ सिसक्का० ॥ ३ ॥ गुरु गंगासिह है आलीम उल्मा चले शायरीर काबमें है ॥ समझना शायर गुबदीसिहको कहा ख्याल तेरे जबा-बमे है ॥ उमरावसिंह बद्रीदत्तसें तुब तागा ताकि सहिसाबमें है ॥ नजनमनसरको नहीं जानता जीता कौनसे निसाबमें है ॥ मिराजे इल्म शंभूने बनाके मुंडी दाडी तेरी पिसा-बमें है ॥ सिसक्का रहेगा० ॥ ४ ॥

सखी दौडका.

अजान जाती है मेरी पर हमे वो बोले नहीं ॥ क्या करे जतवीर हम दिलकी गीरह खोले नहीं ॥ सैकडों सदमें उठाते हैं सदा देते उसे ॥ थकगई मेरी जवांपर वो तो कुछ

बोले नहीं ॥ तबीब बुलवाने सें मतलब हां-
सिल अपना हो नहीं ॥ मेरे मर्जकी ये दवा
दिल्बर जिगर छोले नहीं ॥ इस जमानेमे
अगर कोई ऐसा होवे एलची ॥ जा कहो
उस बेवफासे रसमे बिस घोले नहीं ॥
दिखाता वो इन्तजारी है ॥ यहां दिलपे बे
ककारीहै अश्क चश्मो सें जारी है ॥ दीदकी
तलब गारी है ॥ देखुं तेरी सूरत प्यारी है ॥
यही मर्जी जो हमारी है ॥ भजन सें तरना
तुरत असान अरे उमराव तूं निश्चय
जान ॥ १ ॥

ख्याल रंगत खडी.

गुरु बिना मिलेनहिं ज्ञान चेला ज्ञान
याहोगुरुज्ञानी ॥ बिना जान यह चान ज्ञान-
के गुरु करने मे हैरानी ॥ टेक ॥ गुरु चार-
चीजो सें रहित करे वो मुझसें तू सुन जाना॥
काम क्रोध लोभ मोह नही हो समझले अब
चातुर दाना ॥ ऐसे गुरु की करके सेवा

चहिये ज्ञान उससें पाना ॥ मिले अगर सत-
गुरु पूरा तो तबी कबी होवे श्याना ॥ कलि-
युग के हैं गुरुज्ञान देने मै करें खीचातानी ॥
विना जान पह० ॥ १ ॥ जिकर
कर्ते है कासीपुरी में पंडित था बुधवान
बडा ॥ विचारते वक्त शास्तरमें सामने
उस्के आन पडा ॥ तलाश करने को गुरु
ऐसा उशीवक्त होगया खडा ॥ देश और
परदेश सारेमे गुरु कर्नेको बना कडा ॥
गुरुलोभी चेला है लालची दोनो डूबेगे बीना
पानी ॥ बिना० ॥ २ ॥ कई मुद्दतके बाद
किसीने पता आखिरश बताया ॥ उसी
पतेसें चला चला ब्राह्मण अमृतसरमे
आया ॥ नाम सुनके गुरुनानकका वो द्विज
उनके डेरे धाया ॥ एक शक्सने ले जाके
डचोढीके चेलेसें मिला वाया ॥ मुर्शदका
माल खा खा कंगाल हो रहेथे दिलमें अभि-
मानी ॥ बिना जान पहचान० ॥ ३ ॥ देखके

खाली हाथ विप्रको लगे मुरीद सब धंकाने॥ कहां घुसा जाता है मकामै बता हमे ओ दीवाने॥ वगैर लीये भेट गुरु की कोई नहीं पाता जाने ॥ बहुतसी मिन्नत करी पिप्रने पर नही एक उस्कीमाने ॥ देखे लालची सब चेले तब ब्राह्मणने मनमें ठानी ॥ विना जान०॥ ४ ॥ साथ लिया अपने कहार कुछ किराया उस्का कर दीना ॥ एकतरफ भरी रेतसे बैंगी दूसरी तरफ मींगनली ॥ देख बैंगी ब्राह्मणके साथ चेलोनें कहा शुरुवा कहना ॥रखके गुरुके सामने बैंगी सिर चर्नोमें तूं रहना॥लिखीहुई शास्त्रकी बात अब ब्राह्मणको थी अजमानी ॥ बिना जानप०॥ ५ ॥ लेके हाथ जूता ब्राह्मणनें जमाये नानकके दो चार ॥ देखके वे अदबी गुरुकी चेले मारनेको हुए तयार ॥ गुरुनानक थे पीर ओलिया कहां न कर्ना द्विजपे वार ॥ बहुत दूरसें चलके आया गुरु कर्नेका किया

बिचार ॥ विन अजमायश गुरु बनानेमें है हरशै की है हानी ॥ विनाजान० ॥ ६ ॥ गुरु साहेबने कहा विप्र तुं खूब बजाके ले भाई ॥ शायद इस वर्तनके अंदर कही उन होवे कचाई ॥ हाथ जोडके ब्राह्मणने वो-बिथाजो सारी सुनाई ॥ जिकर रेत मिगन-का आया दिलमें सुकच ब्राह्मण खाई ॥ कहे विप्र सुन अर्ज गुरुजीकी चेलोने बेइमानी ॥ बिनाजा० ॥ ७ ॥ हाथजोडकर अर्ज करी गुरु करोमुझे चेला अपना ॥ कौन मार्ग है जोग ध्यान और कौन वजेसें जप जपना ॥ कौन ज्ञानमार्ग है बताना कौन तरहसें तप तपना ॥ ये संसार कालका खाजा देख रहा गोया सुपना ॥ गुरुने दुर्मति करी दूर क्यौंके वो थे अंतरजानी ॥ बिना जान पह-चान० ॥ ८ ॥ आज कल करम कर लोग कागजकी नांव चलाते हैं ॥ बडे बडे माकूल आजमी फेरे बमे आ जाते हैं ॥ नहीं जानते न

जमन सर और शाय रलक वघराते हैं ॥ नहीं जाने ककाके वलिया कोरा भरम दिखा ते हैं ॥ मुकाबले गर बैठे कोई तो देते फिरे आना कानी ॥ विना जान० ॥ ९ ॥ गुरुगंगा सिंहकी कृपासे ती यार हमे कुछ ज्ञान हुआ ॥ गुबदीसिंहकी मेहर्बानीसें वोही ज्ञान परवान हुआ ॥ उमरावसिंह बदरी दत्तसें तूं मात अपने तईं जानहुआ ॥ हारके रख कलगी वाना अब येही ज्ञान तुझ बान हुआ ॥ कथ कहे ख्याल शंभुदयाल सुन समझना तूं अब दह कानी ॥ बिना जान पहचान०॥१०॥

रंगत ओछी.

मैं इश्कमे तेरे हुआ सनम दिवाना ॥ नहीं छोडा तूंने रकीबोंके संग जाना ॥टेक॥ कर करकें इशारे हंमको लगा जलाने ॥ तेगे अव रूका वार अबलगे चुभाने ॥ पहले तो करी एक तांई हुए बिगाने ॥ कतीं छीनिगा

मिजगांके बान क्यों ताने॥खंजरकी तरहसें लगा तुमारा ताना॥ नहींछो० ॥ १ ॥ पहले तो सनम हर बार पास रहते थ॥ कर्ते थे वोही जो हम तुमसे कहते थे ॥ कनीजो अदा अंदाजसे दिल लेतेथे ॥एवजमें जिसके ऐशो खुशी देतेथे ॥ अब हिज्रमें तेरे हुआ हमे गरम खाना॥ नहीं छोडातूने० ॥ २ ॥ गर सता ओगे हंमको तो भला क्या होगा॥ इस मार जुलफका काटा जाती क्या होगा॥ ऐ यार मसीहा इसे जला क्या होगा॥ जो असलमें कुंदन बना तिला क्या होगा॥ आ-शकके तई अच्छा है नहीं सताना ॥ नहीं छोडा तूने० ॥ ३ ॥ गुरुजन्मासिंहमूर्शद मेरे फर्माते॥ कीया शेर फीर वधिया हंक हजा-ते ॥ उमरावसिंह बद्रिदत्त चंग खड काते॥ सिभूसिंग जामीन रंगी चुस्त वनाते ॥ ओ कलगी वाले अब सह्मलके हंसेगाना ॥ नहीं छोडा तूने० ॥ ४ ॥

रंगत सिकस्ता.

ऐ दिल मुसाफिर सदा यकालिबमें बैठा तूं किस फिकरके अंदर ॥ सब रोरिया जतकी बांध गठडी जो काम आवे सफरके अंदर ॥ टेक ॥ न कोई तेरा न तूं किसीका फकत सौदा है डला चलीका ॥ न कोई तेरे चलेगा हमरा ये रह्याहै बसत नात नीका ॥ जाआ के तुमसें मिला यहां है वो यारहेगा बनाबनीका ॥ संभाल अपने तूं सारे असियान कर भरोसा जना जनीका ॥ शेतान तुडको बकावे बहुता वो डाल खाली कुफरके अंदर ॥ सबरोरिया० ॥ १ ॥ ये पांच पचीस रहे जनोका लगा काफला है तेरे पीछे ॥ धर्मदयाकी करले सिया तुवचा जो चाहे व्हा घरको पीछे ॥ ये सुर्त टट्टू जो थक गया है भजनका दाना दे फेर पीछे ॥ जो वरसरेरा कहींय ठैरे ज्ञान शस्त्र लेवो डेरेपीछे ॥ बडे बडे दुख वा सुख मुसीबत पडेगी तेरी गुजरके अंदर ॥ सब०

॥ २ ॥ किसीने गाडे हैं डेरे तंबू कोई खडा है शरजके नीचे ॥ कोई तो बैठा महल सरामें कोई है लेटाये दरके नीचे ॥ किसीके तकिया लगा गांच दूं किसीके पत्थर है सरके नीचे॥ बिछा दिला किसीके नीचे किसीके कंकर कमरके नीचे॥ न मजले मकसूद है तेरी समझ सिरफ तू कबरके अंदर ॥ सबरोरियां जतकी० ॥ ३ ॥ जन्मासि कहे छोड हवशको कर अब अंदेशा तूं आकबतका ॥ ख्यालसें अपने वो गंगासी नेह बांधा तो शाये आरवीरतका ॥ गुरुगुब्दी सिंहका कहना मानो करो काम कुछ मुवासियतका ॥ उमराव बदरी कहे ख्याल रंगी सुन आन आनके मुसाफिरतका ॥ कहे शंभू अहकर सुना है अवतर नहीं चारां कजाके दरकेअंदर ॥ सब रोरियां जतकी बांध गठडी जो काम आवे सफरके अंदर ॥ ४ ॥

रंगत सिकस्ता.

हिज्रसें तेरे ऐ जान मेरे है बेकरारि ये

इन दिनोंमें ॥ वोदूद दिलसें बने हैं वारों है चश्मजारी है दिनोंमें ॥ टेक॥ वेगंका मारा है आह नारा उडे फरारी ये इन दिनोंमें॥ऐ मेरे महरंजले हैं हरदं तुमारी मारी ये इन दिनों-में॥बदल के तूने फवन मिसाले चमन सवारी ये इन दिनोंमें ॥ जो घरसे निकला दिलोको चला है धूम भारी ये इन दिनोंमें॥जो तूं जुदा है फिरा खुदा है है इंतजारी ये इन दिनोंमें॥ वादूद दिलसें बने है० ॥ १ ॥ ये बेबफाई क्या अशनाई है जख्मकारी ये इन दिनोंमें॥ वो बेइमानी है खेंचातानी दे जान उधारी ये इन दिनोंमें ॥ बस चुपहि रहना न कुछभी कहना अख्तरशु भारी ये इन दिनोंमें ॥ अरे संग दिल हुआ था बिस्मिल ले जान सारी ये इन दिनोंमें ॥ है आठ पहरी ये राह मेरी है धुआं धारी ये इन दिनोंमें ॥ वोदूद० ॥ २ ॥ क्या शैद कर्ता है दिल तूं मुर्दा बना शिकारी ये इन दिनोंमें ॥ वो दे दे ताने बता बहानेके

संग सारी ये इन दिनोंमें ॥ जो याद आवे तो दिल डुबावे अदा पियारी ये इन दिनोंमें ॥ न पास आता खूब जलाता कदे है खुवारी वे इन दिनोंमें ॥ हुए हो प्यारे क्यों हंस न्यारे अमर लचारी ये इन दिनोंमें ॥ वो दूद दिलसे बने है० ॥ ३ ॥ गुरु जंन्मासि मिसाल बाद रहै ज्ञानवारी ये इन दिनोंमें ॥ जो बद्री उमराव उनके घर जा अदब गुजारि ये इन दिनोंमें ॥ क्योंचख चखाता फिरे लखाता तूं बोल हारी ये इन दिनोंमें ॥ वो कलगीवाले जरा बिठा ले तूं कलगी नारी ये इन दिनोंमें ॥ कहे शंभू तुझसे तुरेसें व्यादे न रख कंवारी ये इन दिनोंमें॥ वोदूद दिलसें बने है वारां है चश्मजारी ये इन दिनोंमें॥४॥

रंगत बहरेत वील.

तेरे हुसनकी तशवी मैं किस्सें करूं मेरा करतार सांईजह नहीं॥ वोस्तांई नही गुलिस्तांहीनही गुलशनहीं नही वो चमनहीं

नहीं ॥ टेक ॥ तेरी चोटी अजब मियां सोती गजब होती मुझसें बयां तो फबनही नहीं ॥ मार नहीं अफइही नहीं और नाग नहीं नाग नहीं नहीं॥ काली जराली है जुल्फसनं कहां जाता है लुल्फ शकनही नहीं ॥ दाम नहीं जंजीर नहीं संमूलही नहीं वो समनही नहीं॥ पेशानीसें पेशन जानीऐ दिल होता इनका तो कुछ भीजत नहीं नहीं ॥ कुसला० ॥ १ ॥ आरि जहै तेरे ऐ जानी मेरे कुछ कहना रुवा गुलवदनहीं नहीं ॥ माह नहीं खुर्शीद नहीं कुरसें अनवर दर्पनहीं नहीं ॥ मागतो दिल-कों मागहि ले और पडती सिफत कुछ बन-हीं नहीं ॥ वर्कही नहीं वो शफकनहीं नहीं ॥ कयकसांही नही वो किरहीं नहीं ॥ लब लालसें लालमणीहो है जी हो गुल ओर क्या सो सोसही नहीं ॥ बोस्ताईनही० ॥ २ ॥ तेरी अवरूका आया खयाल मुझे कहूं उस्कासा तोबा कपहीं नहीं ॥ कमाही नहीं

वो कटार नहीं तलवार वो कोंस अफगहीं नहीं ॥ मिजगाहै कमाल पै मालकरैं हैगा इन्का क्या वस्फ कठीनही नहीं ॥ तीर नही पैं कोई नहीं भरछी भाला खटकहीं नहीं ॥ चश्मसे नार्गिश शर्मगीहो प्याला लाली वो आहूबेब नहीं नहीं ॥ बोस्तांई नहीं० ॥ ३ ॥ लछमन भारतकी तूं आजा सरन तेरे अलयासा जागोजग नहीं नहीं ॥ फताही नहीं अहमदही नहीं दर्वारी नहीं वो कीशनहीं ॥ गंगासिंह गुब्दीसिंसे मियां तेरा चलता यहां कोईफ नहीं नहीं ॥ गांनाही नही बजानाही नही मिलानाही नहीं वो कथनहीं नहीं ॥ बुधसिंहका ख्याल संभाल मियां कोई ऐसा तो सीरी सखुनहीं नहीं ॥ बोस्तांई नहीं० ॥ ४ ॥

रंगत लंगडी.

देह देवकीसें पैदा अब ज्ञान कृष्ण उत्पन्न हुए ॥ त्रिलोकीमें सकल सुर नर मुनि

सुन परसन्न हुए ॥ टेक ॥ कामके पहरे वाले जोथे सोय रहे उसदम पडकर ॥ मन मथुरासे भोग वसुदेव चला लेके रा पुत्तर॥कुमत कैदखानेके ताले खुले निकला बिल्कुल बाहर ॥ चला वहांसें वहांसे चलकर पहुचा जम्नापार ॥ शेर ॥ ये अब दारूपी जम्नाए कदंसे चढगई ॥ थोडासा विस्तारथा पर देख बसुदेव बढगई ॥ छूकदं श्रीकृष्णके जम्ना उतर रस्तादिया इस्कसें उस सर्व कदके प्रमरसमें मंडचोगई ॥ चौपाई ॥ झट गोकलमें जापहुंचाया ॥ विदा जसोदा गोद बठाया ॥ जोगमाया पुत्रीको दिखाया ॥ वसदेव लडकीको ले आया ॥ ॥ तोड ॥ कंसका मना पहरेवाले जन्मा बच्चा चेत न हुए ॥ तिलोंकीमें ॥ १ ॥ जसुदाने भी श्रीकृष्णको सुनो पालना सुरू किया ॥ अपनाहि लडका समझके उसने उसको पाललिया ॥ पाप पूतना बुला कंसने उसको कुछ लाल-

चभी दिया ॥ और कहा ये कृष्णको मारेतो जानुं छलिया ॥ शेर ॥ जो तूं मारे कृष्णको दूंगा मै तुझको इनाम ॥ और सारे नौकरोंमें मैं करूंगा नेक नाम ॥ मुझको दहशत है वडी ये वात निश्चै जानियो ॥ वाद मुद्दतके ये फर्माया है मैने तुझको काम ॥ चौपाई ॥ गोकलमें गई पूतना भाई ॥ जसुधाका घर पूंछती आई ॥ जसुधासे जाके बतलाई ॥ कृष्णचंदको दूध पिलाई ॥ क्षीर पीतेही कृष्णचंद्रके मोक्ष प्रान पडीधरन हुए ॥ तिलोंकीमें० ॥ २ ॥ कंस कैदखानेमे आया आकर यों देवकीसें कहा ॥ लादे मुझकों ये बच्चाजोके तेरे पैदाहुआ ॥ लडकी कंसके हाथमें देदी देवकीने जब बचन सुना ॥ सत्याशिलापे देमारी आकासमें गई छुटा भुजा ॥ शेर ॥ आसमामें छूटकर जिसवक्त ये लडकी गई ॥ वरक सांचमकी मियां और खूबही भडकी गई ॥ अष्ट सिद्धि जाके है

दिखलाईजाके अष्ट भुज ॥ दिखलाके अपना करस्माव्हांसें वो फिर कडकी गई ॥ ॥ चौपाई ॥ मुझको तूने नाहक मारा ॥ तेरे मारे क्या मरे हमारा ॥ गया गोकुल तुझे मारनहारा ॥ अब क्या कर्ता सोच बिचारा ॥ सुनके कंसने कहा सोचकर कब मारनके जतन हुए ॥ तिलोंकीमें ॥ ३ ॥ राक्षस मानेंको कृष्णजीके भेजाथा सो जेर हुआ ॥ कृष्णने मारा मारतेही उस्का वां ढेर हुआ ॥ सुना कंसने मरा कृष्णनहीं ऐसा क्या अंधेर हुआ ॥ समझ गया मैं कर्मका आन हेर और फेर हुआ ॥ शेर ॥ कहे कबीकोई कहांतक किस्सा बहुत तबीलहै ॥ है मिसाले मोर कबिजन और कथा ये पीलहै ॥ कंसको मारा किसनने कौनहीं जरा ढीलहै ॥ मुर्शद मेरे द्विज गंगासिंघुगुण गात सागर सीलहै ॥ चौपाई ॥ गुन्दीसिंहने ये छंद बनाया ॥ उमरासिंहनै गाय सुनाया ॥ बद्री-

दत्तके दिलको भाया ॥ निगुरा सुन करके घबराया ॥ शंभूसिं धर ध्यान हमेशा कृष्णचंदके दर्शनहुए ॥ तिलोंकीमें० ॥ ४ ॥

रंगत शिकस्ता.

असल खिलारी हूबे अनारी तूं पासे निगुंनको डाल क्या है ॥ जो काली पीलीमें मारुं तेरी तो फिर सुचाल और कुचाल क्या है ॥ टेक ॥ दुरेपें दुर्मतको दूरकर्के बचा सबज होवे लाल क्या है ॥ जो तीनका ने त्रिकाल आवे तो बाजीको हो जवाल क्या है ॥ ये चौक चारों बेद समझके जो जीते तो फिर कमाल क्या है॥ ये पंजडी अब पांच तत्वकी आई देख मियां बे मिसाल क्या है ॥ छक्का छयों शास्त्रके आगे पडा हमारे सुढाल क्या है ॥ जो काली पीली० ॥ १ ॥ दुबारा चौथा तबक मे खेले न हारे हंसे मजाल क्या है ॥ वो दसका जुग मारा खूब हमने तूं नर्दको अब संभाल क्या है ॥ है तीन छक्के पु-

राग अठारा देख इस्मेकी लोकाल क्या है ॥
तूं सात सत्तेमें माराजावे हर एक तरे देता
टाल क्या है ॥ जो तेरा सत्राहीमे रहेगा न-
जातका फिर हवाल क्या है ॥ जो काली
पीली० ॥ २ ॥ जो पांच और चार नौमे लि-
पटा तूं ग्वोर कर ये बबाल क्या है ॥ वो पंन
पौके वगैरे आये लेगोट अपनी निकाल क्या
है ॥ जो मनमें धारे वो नर्दमारे तूं हमको
देता वो ताल क्या है ॥ ये देख चीरा खुला है
तेरा मै मारूंगा अब मुहाल क्या है ॥ न खेल
बदकर तूं हमसे अक्तरस वालपर होसवाल
क्या है ॥ जो काली पीली० ॥ ३ ॥ ये जन्मा-
सिंह गुरु खूब खेलकर दे तुझको अह मखि
लाल क्या है ॥ गंगासिं गुन्दीसिंसे गाके
हुआ कवी तूं बेहाल क्या है ॥ उमरावसिं
बदरीदत्तकें आगे तुं गाता अब ऐ कंगाल
क्या है ॥ तुरे रावके तूं साथ बरदे ये तेरी
कलगी छिनाल क्या है ॥ मुकाबलमे शंभु-

सिंके है ख्याली तेरी ये ख्याल क्या है ॥
जो काली पीली० ॥ ४ ॥

रंगत बहेरेत बील.

जम्नाके निकट खडा शिरधर मुकटलो मौजसें धेनु चरावत है ॥ आवे चोरा चोरी करके जोरी मेरा मांखन मुफत लुटावत है॥ टेक ॥ जोबनका दान मागे नंदका कान नही छूंतो दुंद मचावत है ॥ रस्तेमे अडा मोये पावे खडा मेरी गैलपडा वो सतावत है॥ मेरी पडगैल मोसें करत फैल सखि यहीं खडावो पावत है ॥ नहीं हया शरम उस्के है जरा नंद जसुधाको भी लजावत है ॥ मेरा आना जाना बंद किया काना हांककी तरह बतलावत है ॥ आवे चोरा चोरी० ॥१॥ ग्वालना कहें सुनले लाला ले अभी तूं माखन खावत है ॥ मारूं थपोर छोडाजा न छोरदई मारेरहं मोहे आवत है ॥ लूटूं पिया तारलु धुतिया छीन किस विरतेपै

इतरावत है ॥ नंदका ले पालवा ब्रजमें कहें तूं जरा नहीं सरमावत है ॥ कहीं पडा पडा सडजाय कंसके तोकों कौन छुडावत है ॥ आवे चोरा० ॥ २ ॥ बोले गिरधारी सुनले गवारी क्यौं दीदे फार डरावत है ॥ कई दिनमे हाथकहे लगी ताथ दिन रखूं साथ कहां जावत है॥तेरे संगहै सखी एक मै लखी सब झपट गुवालम गजावत है ॥ रहो हमारे पास चरनोकी दास कह कुचापे हाथ लगा-वत है ॥ बैयां मरोरी धरी घर मटकी फोरी फिर सीनेसें लिपटावतहै॥ आवे चोरा०॥३॥ गुरु जम्नादासका शिष्य होखास क्यौं और-से मुंड मुंडावत है॥जिसदिनहो दई तुझे करे मुरीद युं गंगासिं फरमावत है ॥ गुब्दीने आन तेरा मारा मान बेइमान भाज कहां जावत है ॥ उमराव बजाके चंग सभा केर दंग मजेसें गावत है ॥ बिद्रा बद्रीसिं भूसिंह कहै माधा सुगन बडा रावत है॥ आवे चोरा चोरी० ॥ ४ ॥

रंगत सिकस्ता.

क्या रोशनी है वो माहरूकी जरासें जर्रा कमरके अंदर॥ चमक रहा है वो नूर उस्का फरिस्ते जिन हरबशरके अंदर॥ जो हुश्न माशूकोमें दीखता कलील उस्के कसरके अंदर॥ तसव्वरहै आशकोंके दिलपर वही वस्फ है कमरके अंदर॥ लबे सोसनीकी है ये सब जीजो दीखती हर शजरके अंदर॥ असर कर्ती वो निगाह कातिल जो नहीं होता है सहरके अंदर॥ जो के मजा मिलता है महरमे वो इश्कमे है कहरके अंदर॥ चमक रहाहै० ॥ १ ॥ व सालसबमे है लुत्फ ऐसा न जैसा है शबक दरके अंदर ॥ नहीं मजा है शराबमें जो मये मोहबत खुमरके अंदर॥ नसानी उस लासनाका कोई मिला किसीको दहरके अंदर॥ तसुफमे देखे उस्का जलवा वोही मियां है कुफरके अंदर॥ निगह गौरसें तूं देख उस्को फर्क क्या शज-

रों समरके अंदर ॥ चमक० ॥ २॥ मिजे तीरकी वो नोंकपै कांनहीं तेजी नश्तरके अंदर॥ ये तेजीये गुस्सा है उसीके जो हो रास उल महरके अंदर॥ कमाल है बाद-शाही उस्की जो करता अपने सदरके अं-दर॥ अजब शान उस्की है यारों वो करे सदरबी गदरके अंदर॥ वरुफका उस्के नहीं बयां हो अगर हो उमरे खिजरके अंदर॥ चमक० ॥ ३ ॥ कहे जम्नासिह क्या वादी बकता बता फरक दरब वरके अंदर॥ ये गंगासिंह गुरु वो ऐसे शायर नथा सानी उस असरके अंदर॥ हैं मुर्शद तो अपने गुब्दीसिं-हजी करे मात एक पहरके अंदर॥ दे उम-राव बदरीलाल तुझको संभालजे रोज वर-कके अंदर॥ सखुन गौहरकी सिलकमु शिल शिलवना सिंभू हर बहरके अंदर॥ चमक रहा है वो नूर उस्काफ० ॥ ४ ॥

शिकस्ता रंगत.

जुदाई ये दिल रुबांसे पहले सिगाफ सीना हुआ हमारा॥रहे रात दिन आह नाला हंका निकल रहा गंगाका वो शरारा॥ टेक॥ ये राज दिल अब सुनाऊं किस्को वजूज तेरे दिलको नागवारा॥ ये इश्क उल्फतमें तेरे हरदं चले हमारे है सरफेआरा ॥ जो मिल-नेकी तूने जुस्त जूकी मिला नूर गोया गग-नमे तारा ॥ तेरी चाहमे मिसाल मजनु सुका दिया तन बदन ये सारा ॥ जो बैठू तनहा तों दिल उबलता कभी तो ढलता है मिसले पारा ॥ रहेरातदिन० ॥ १ ॥ हूं हंचुको कन-फिरुं भटकता अजान मन अब तो मारा मारा ॥ वो चाह हमने हंरेक देखा मिले कहीं यूसफ अपना प्यारा॥रंगे सीता मे रहा तड-फता चलान कुछ पन्नका भीचारा॥ वसल हु-आ तो फिर क्याहुआहै हुआ जिगर जबके पा रा पारा ॥ नबख्त अखीर बीवस्त होगा तो निकलेगा फिर कबरसे नारा॥रहे रातदिन०

॥२॥जो दिल हमारा लिया है तूने करो जान अब मेरा गुजारा ॥ जो कुछ खताहुई है यार हमसै तूं माफकर मत सता दुबारा ॥ बहुत ही हैराहूं आजाब जालियां आखरश तेरा सहारा ॥ लगा देखे वो थे पार मेरा पडी है किस्ती ये बीच धारा ॥ जो कलब अपने मै गौर किया तो एक दफा दिलको फिर उभारा ॥ रहेरातदिन० ॥ ३ ॥ तेरे गुरुका गुरु ऐ बेमरबत वो बारहा गंगासींसे हारा ॥ क्या गुब्दीसिंके मुकाबले में करे तेरा मुर्शद वो बिचारा ॥ तुं बद्री उमरावसिंहसें गाले बैठ मुकाबिल नदे किनारा ॥ वो तोडे टांके तेरी कल्गीके चले सभामै वो ही फुवारा॥ खयाल शंभू है लाल गोंयान रख मकाबिले में संग खारा ॥ रहे रातदिन० ॥ ४ ॥

रंगत तिताली.

श्रीकृष्णमहाराज रटूंतो ये आज रखो मेरी लाज है विपत घनेरी ॥ दुःसासन ऐचे

चीर विना तकसीर धरूं कैसे धीर लो तुम सुध मेरी ॥ टेक ॥ कबीराके बाल देडारी व-नके व्यौपारी हुंडी सिकारी नरसीकी पलमें अपने भक्तनके काज गये तुम भाज जाके गजराज उभारा जलमे ॥ देवकी वसुदेवकी सहाय करी तुम ध्यायवो दरसादिखायो पौंचे गोकलमे ॥ कंसका चोटा पकड मुस्क फिर जकडनिकाली अकड रहीना खलमें ॥ मेरी भी सुनो अरदास चेरीहूंखास मुझे है आस प्रभू वो तेरी ॥ दुःसासन० ॥ १ ॥ हता हिर-नाकुस तत्काल होके बिकराल करी प्रत-पाल जनकी गिर्धारी ॥ भिलनीके झूंठे बेर मुखमें लिये गेर करीना देर जाने नर नारी॥ पोकर पिपा रैदास भगतथे खास स्वर्गमे बास जिनका बनवारी ॥ नामदेवकी छांद छवाई देर नालाई बने प्रभु नाई भगत हित-कारी ॥ मुझे निज दासी पहचान टेर सुनो कान तडफते प्रान दुष्टने घेरी ॥ दुःशासन०

॥ २ ॥ यहां बैठे सभा भरपूर माने नही क्रूर करे मगरूर अर्ज मेरी तुमसें ॥ मोये दुष्ट उघाडी करे न दिलमें डरे हो तूं मतपरे आज प्रभु हमसें ॥ द्रोपदीकी सुनी पुकार खेलते सार कहा ललकार अनंत एकदमसें ॥ बढगया चीर अपार दुष्ट गयाहार रुकानी पूंछे पार विरमसें ॥ पासेमे नहीं अनंत वतावो कंत बातका तंत करो मत देरी ॥ दुःसासन चीर० ॥३॥ सुन हथनापूरके बीच चीर रहा खींच बडा है नीच दुःसासन जान ॥ रुक्मनको भेद बतलाया चीर बढाया गुब्दीसिंगाया ये निर्गुन ज्ञान ॥ कथ कहे उमरावसिंबद्री अरे दालिद्री तूं है बेकदरी समझ हैवान॥राजे रामसें गालेवो कलगीवाले क्यों देता टाले फिरे नादान ॥ मुंताजअलीके ख्याल सांचे ले ढाल सुन ततकाल खाय चकफेरी॥ दुःसासन चीर० ॥ ४ ॥

रंगत खडी.

सत्यरूप महाराज एक बनमाली करे तुमसे अरजी ॥ आया बागमें बरामस्त नहीं माने संक मनमें डरजी ॥ टेक ॥ उसी बराकी कहूं हकीकत सभी बाग कर दिया पमाल ॥ सतर तखते मिले गरदमें के केसर क्यारी लाल गुलाल ॥ चौथा हिस्सा खो दब गया पान फूल तरवत और डाल ॥ हाथ जोडके करूं बिनती सुनो अरज मेरी भूपाल ॥खिले पेड बाग रंग भीना॥रहे सप्त मुनि परवीना ॥ अब देख रूप विक्राल सुरकामें कंपू कर्तें थरहरथरजी ॥ आया बागमें ॥१॥ उसी बागमें रहे देवता सिद्ध मुनी गंधर्व सारा ॥ रटे सच्चिदानंद नाम एकरूप निरंजन निराकारा ॥ उनके तपका तेज बहुत है जो चंदाका उजियारा ॥ खावै फल और रहै मगनमें जस गावें निसदिन थारा ॥ जोगेश्वर ध्यान लगावे ॥ जस थारा स्वर्ग पौंचावे ॥ अब थे जो बाग मैर सिंह छोडकर

भाग चले अपना घरजी ॥ आया बागमें०
॥ २ ॥ सुकरयादी प्रीत लगाई किया बागमें
अंधियारा ॥ सिद्ध मुनी सब रसके भोगी
उठ चले नहीं लगे वारा ॥ सत्यरूप तुम
आप विराजो सीलवंत रानी तारा ॥ धर्म
तहां अधर्म बिराजे थे अचरज मुझको
भारा ॥ तुम सुनु हमारी बानी ॥ मै कहूं प्रेम-
रससानी ॥ अब अर्ज करूं ठाकुरको आगे
सत जीता हरचंद नरजी ॥ आया बागमें०॥
॥ ३ ॥ आया पापका मूल बागमें जिसकी
महमा है अद्भूत ॥ कान सुना आंखो
नहीं देखा कालरूप जमकासा दूत ॥ सत्य-
तुम आप विराजो सूरजबंसी हो रजपूत ॥
कर अंसवारी चलो पकडने सब बातोंसें हो
मजबूत॥ चंगपे तुर्रा निशान दिया गुरुदीसीं
मोहे ज्ञान ॥ कहे शौभसाद धर ध्यान ॥ रटा
कर शिवशंकर बंब महरजी ॥ आया बाग-
में ब० ॥ ४ ॥

कवित्त.

शहर तो भिवानी देश देश अंतरजानी आथेको वरदाना है ॥ बडे बडे साहुकार बैठे कोठी डार डार करत व्यौपार सब रोकड और किरानाहैं ॥ शहरके समीप सुंदर ताल साधु छाये पाल पाल करत नित नेम धर्म हरिगुन गाना है ॥ कहे हरिदास पूरे मनकी आस याके संग त्रिलोकीमें शहर भी न आना है ॥ १ ॥

रंगत खडी.

आनंदकंद श्रीकृष्णचंद हो भगतनके हितकारी तुम ॥ धरे ध्यान तेरा निसदिन प्रभु सुनियो टेर हमारी तुम ॥ टेक ॥ पोकर पीपा तरे नामसें मीरांबाई तारी तुम ॥ बचा लिया गज ग्राहसे जाके ऐसे कुंज बिहारी तुम ॥ खाये बेर भीलनीके झूठे मीठे गिने न खारी तुम ॥ अपना भगत पैछान कबीराके बादल जा डारी तुम ॥ ध्रुवको पदवी अटल

दुई जाबलके बने भिखारी तुमाधरे॥ ध्यान० ॥ १ ॥ भात भरा नरसीकेशा हवन हुंडी तुर्त सिकारी तुम ॥ सेन भगतके कारन करी प्रभु नृपकी खिदमतगारी तुम ॥ तार दिया रैदास भगत ताडका तो मार संहारी तुम ॥ जनकी कर प्रतिपाल जाय दसकंधर भुजा उखारी तुम ॥ भक्त विभीषण समझ लंकपति कीया तुर्त बनवारी तुम ॥ धरे ध्यान तेरा० ॥ २ ॥ प्रहलाद भक्तहित खंभ चीर नरसिंह देह प्रभुधारी तुम ॥ जनकी रक्षा करी पलमैं हता हिर्नाकुस बलकारी तुम ॥ भारतमैं बिरहीके अंडे रखे घंटगज डारी तुम ॥ भगत समझ निज धना जाटके करी खेत रखवारी तुम ॥ दलदैतांके जीते और मुनियोंकी यज्ञ संवारी तुम ॥ धरे ध्या० ॥ ३ ॥ गिरी धार जब गिरिवर धारा तबसें भये गिर्धारी तुम ॥ कुबरी गले लगाई जा छोडी वृषभानुदुलारी

तुम ॥ गुन्दीसिं शंभूदयालकी सहाय करो हरवारी तुम ॥ बदरी उमरावकी मदतपें रहते कृष्णमुरारी तुम ॥ राजेराम बुधसिंके मुकाबिल क्या गाते दरबारी तुम ॥ धरे ध्यान० ॥ ४ ॥

सखी दौड.

अरे मन कर गोविंदका जाप ॥ कटे तेरे जन्मजन्मको पाप ॥ करे दुनियांमें वृथा कलाप ॥ तेरेको कहीं न आवे थाप ॥ बांधा गुबदीने मेरे गंडा ॥ छीन लूं चंग मार डंडा॥ ॥ १ ॥ जी ॥ रवतही ॥

ख्याल रंगत मनबसी.

तुम सुनो बिरजकी नारी कहे गिरधारी बंसी दो मोरी ॥ टेक॥ थी अमोल वंसी मोरी सखी तैं चोरी सुनी है मैंने ॥ भूलो हूं या ठौर लई ना और लई सखि तैंने ॥ सखि तेरे काम नहीं आवे मती तरसावे हमें ना चैने॥ झड ॥ सखी सोच रहा सारी रैने ॥ मैं आयो

बन्सी लैने ॥ मती लडावे ऐने सैने ॥ बन्सी
लादे बृजनार कहूं ललकारनकर बरजोरी॥
तुम सुनो० ॥ १ ॥ ग्वालना कह सुजान
अहो रे कान कूड मत बोले॥ तूं और कहीं
आयो खोय दोष दे मोय ढूंढतो डोले ॥ तूं
और कहीं आयो धरके देख मन करके वहीं
जा टोले ॥ झड ॥ मत वचन कहे बे-
तोले॥ तूं बन्सी बतावे अनमोले ॥ मत मारे
गजबके गोले॥ मैंने बन्सी ना लई खाती हूं
सई मैं सोगन तोरी ॥ तुम सुनो बिर० ॥२॥
फिर बोले कृष्ण भगवान अहोरी नादान
विरजकी नारी ॥ तूं मत कर लोग हंसाई
दीजे मेरे तांई मुरलिया प्यारी॥हो मेरा तेरा
बिगाड मचेगी राड करूंगा खुवारी ॥ मैंने
मनमें सोच बिचारी॥ तूं है ग्वालन गंवारी॥
ला बन्सी मुझे दे जारी॥बन्सी लुंगो एकदं मैं
करूं महर मैं तुझे मैं गोरी॥ तुम सुनो०॥३॥
अरे बन्सी कैसी होय कहूं मैं तोय नंदका ला
ला॥ है पिता तेरा सतवंत तूं है गुनवंत रूप

काला ॥ अरे नैनन देखी कभी बात कहूं सभी बडा तूं चाला ॥ झड ॥ लकडीका नाम बन्सा डाला ॥ ले लकडी और चडाला ॥ मत बचन कहो निरयाला ॥ जिन घर तुमसी औलाद जावो बरबाद गाम उजरोरी ॥ तुम सुनो० ॥ ४ ॥ सखी उजरो चाहे बसो तुम क्यों अब हंसो सरम नहीं आती ॥ सखि तुम सरीकी लख चार नंदके द्वारपे गोबर ठाती ॥ सखि लख आवे लख जाय खडी लख दर्सनको ललचाती ॥ झड ॥ लख ठाडी मीनती खाती ॥ लख खडी खडी इतराती ॥ लख दर्सन कर हट जाती ॥ तूं देखो असल गंवार अरे बृजनार करी तैने चोरी ॥ तुम सुनो० ॥ ५ ॥ हमको कहत गवार आप सिर द्वार बनारे लडके ॥ तेरे मुखपे मारूं थाप बदन जाय काप आसूं पडे झडके ॥ तुमसरके ग्वालिये कान आके नित छाछ मांगते तडके ॥ झड ॥ मत इतना दिलमें भडके ॥

क्या लेगा हमसें अडके ॥ अब जा तूं घरकों लडके॥सब चतुराई बहाय चराई गायन कर बरजोरी ॥ तुम सुनो० ॥६॥ इस बन्सि की सार अरे वृजनार तूं अब क्या जाने।इसे जाने ब्रह्मा महेश शारदा शेष सुने नित काने॥ सखि इंद्र आद ले कबी सनकादिक सभी धरे नित ध्याने ॥ झड॥ इसे नवों नाथ पहचाने॥ चोरासी सिद्ध सुने ज्ञाने ॥ नहीं महमा कपर वाने ॥ अरी बाला क्या बतलावे हाथ नचावे अकल गई तोरी ॥ तुम सुनो० ॥७॥ एक चतर सयानी नार होके हुशियार बन्सी से आई ॥ जीते हो श्याम बिहारी वो ग्वालन हारी कहूं जितलाई ॥ लछमन भारतके छंद हरफकडीबंद नई धुन गाई॥ झड ॥ है ऐसे जादो राई ॥हो जन्मासिं कि सहाई ॥ यूं कहे गंगासिं भाई ॥ धुन बल्लासीने बनाई गुन्दीसिं गाई बादी डप्पेंरी॥ तुम सुनो०८॥

रंगत बहर तबील.

जब प्यारेके इश्कमें महू हुए फिर

हमको कजामें रजाई नहीं ॥ भला जाके अति बांपे रख्वार क्यौं होय तो जिस्म हमारा रहाई नहीं ॥ टेक ॥ अबरंजो अलम् सब सही चुके हंको रहे जो रोजफाही नहीं ॥ हमको तो सताया बतेरा मियां पर दर्द हमारे हुआई नहीं ॥ हैगा इश्कका मर्ज तो ऐसा नहीं केमरीजको होवे सफाई नहीं ॥ माशूकन ऐसा सुना है भला करी जिसने के यार बफाई नहीं ॥ हम इश्कमें उस्के तो मरही चुके कही मुर्दा मरा तो सुनाई नहीं ॥ भला जाके० ॥ १ ॥ हम न दिया जिस्म रहा कहां जिगर रहे जख्मकी तो कोई जाई नहीं ॥ दिल पास तो उस्के चलाई गया माशूक क्यों हमको मिलाई नहीं ॥ जिस्पे दिलो जांसें फिदा मैं दिला फिर हम ये वोहो क्यौं फिदाई नहीं ॥ हम याद जिसे करते हरदं हरगिज हंसे वो जुदाई नहीं ॥ मरना हमें इश्कमें है गारवा कोई इश्क वगैर मराई

नहीं ॥ भला० ॥ २ ॥ जब दो कालिब एक
जान बने फिर दर्द हमीने सहाई नहीं ॥ और
जो कुछ यार बुरा वो भला कहा हंको फकत
है कहाई नहीं ॥ बेवकूफी हमारी जो माने
बुरा कहनेका तो उस्के बुराई नहीं ॥ तनो
जान अमानत उस्की दिला फिर करनी
आदां बयारवाई नहीं ॥ बेहतर है आदां ये
पहली बने फिर होती खुसीसें आदाई नहीं
॥ भला० ॥ ३ ॥ जन्मासिंने गंगासींसें कहा
आशक तो है पात सजाई नहीं ॥ गुब्दीसिं
कहते तूं आशक है पर इश्ककी बूतो जराई
नहीं ॥ उमरावने कहा तूं रंगा है जरा पर
इश्कके रंगमें रंगाई नहीं ॥ बद्रीको कडा
मियां रंग चडाकरे दीद सिवाय दवाई नहीं
॥ शंभूने कहा तूं तो खाम रहा तैंने इश्क-
का पाया मजाई नहीं ॥ भला जाके० ॥ ४ ॥
लगी पटकन फन नागन अपना लट-
कत जो लखी लट एक तरफ ॥ पट घुंघट

नेक पलटतेही रथ सुन चंद गयो डट एक तरफ॥ टेक ॥ मृगलोचनी मोचनी कष्ट ब्रहे उबजावनी भावनी रूपवती ॥ जाके रूपको देखके भूप कहे सुर रूप रहो ना रती मै रती ॥ चपलासी चमकत चौक चले छबि जीत हरी कमलाकी सती ॥ गत निरखत हंसको अंस गयो निज भूल गयो गजराज गती ॥ झमकत पग पाय पायल झाझनसी बिछवोमें अनवट एक तरफ॥पट घुंघट० १ अलबेली अकेली थी महलनमें कोऊ आनके जोबन लूट गयो॥ झकझोरी मरोरी में गोरी कहे लख हार हजारको टूट गयो ॥ चलते झट फैट गही कसके हंसके हरहातसें छुट गयो ॥ मोये रैंनसें चैन नहीं चितको वो तो मारके मोहनी मूठ गयो॥चुनरी उड रंग गयो सुनरी सखी चोली गई फट एक तरफ॥ पट घुंघट० ॥ २ ॥ चली संग अलिनके कुंजनमैं जहां चंपाके भावसे हूल रही॥

तहां कोऊ हसे रसरंग लसी कोऊ गायके चावसें झूल रही ॥ प्यारी मन मार मलीन खडी अपने सुद आपेकी भूल रही ॥ उस्को चलना कब सूऊत है जिसके पगमें चूभ सूल रही॥ इतनेमें मिले नंद लाल गले लिपटी हटके झट एक तरफ ॥ पट घुंघट० ॥ ३ ॥ गुरुजन्मासिंह भौ पार भये प्रभुके पदपंका जो ध्यान लगा ॥ नर डूब गया मज धारमें वो जिन तोडा है प्रीत लगाके तगा ॥ भोलु अलखधारीका अटु अब छोडके चंग दंगलमें भगा ॥ सिर पीटके सायद रोवेगा तू मत सूते बिवादको फेर जगा ॥ कहे शंभू जो गावे तो ज्ञान सुना नहिं हट जा मगज चट एक तरफ ॥ पट घुंघ० ॥ ४ ॥

सखीदौड.

जुल्फकी घुंडीमें उसने दिल हमारा खेंचके ॥ कर लिया काबूमें कातिलने दुवारा खें-

चके॥और चढ गया सीनेपें वो शंशीर आरा खेंचके ॥ गरबच्चू शंशीरसे मारे कटारा खेंचके॥ बस गुजर जावेगे अब हं अहो नारा खेंचके ॥ इसलिये लाया था य्हां मुझको सितारा खेंचके ॥ गंगासिं मुर्शद्ने जिस दं छंद् उचारा खेंचके॥ ज्ञानकी जंतीमें दुश्मनको सुधारा खेंचके ॥ १ ॥ चौसा ॥ खिचाचट अजब गजब रफ्तार निगह मिलतेही ले सीर उतार ॥ मुश्कसें हुआ मस्त अत्तार बोल बकह कहै शीरी गुफ्तार भोलू गुनी हर्गुनके दातार ॥ बजे नित चंग संग सितार ॥ अखाडा है अबनासीका कटे फंद् चोरासीका ॥ २ ॥

रंगत लंगडी ख्याल होलीका.

लोग खेलनेको खेलते पर जैसी होली हम खेले॥ कोई ना खेले अगर खेले तो बहुतही कम खेले॥ टेक॥ काम क्रोध मद लोभकी अक्कल खूब गुलाल उडाते हैं॥ निर्गुन

सगुनको मिला एक गहरा रंग चढाते हैं ॥ गुरुशब्द पिचकारी पांच पच्चीसके आगे अडाते हैं ॥ ऐसे रंगसे भेते मन मस्तपे कदं बढाते हैं ॥ सत्यनामकी छूटे फुवार रंग भीने यार दंदम खेले ॥ कोई ना खेले० ॥ १ ॥ क्षमा सील संतोष अबीरको यारो मुहसे खूब मला ॥ ताब चमककी नझेले कोई अगर झेले विरला ॥ सागरशोकसे मय हदत भर भर गुरसाकीने दई पिला ॥ सात पीचुका जाम आठवेंमें दिलवर आन मिला ॥ जब दिलवर मिल गया तो फिर हम होली अंग निगं खेले ॥ कोई न खेले० ॥ २ ॥ हुआ नशा रंग लाल हुए तौ मुजरेकी फिर ठैराई ॥ हरीनाम घुंघरू बांध येक परी वहांपे नचाई ॥ अनहद बाजा बजा फिर उसने सोहंकी सोरंट गाई॥ अजब थी प्यारी सुरीली लै उसके दिलको भाई ॥ जो मुजरा नहिं देखे लख चोरासीं सांग थंथम खेले ॥

कोई न खेले० ॥३ ॥ जम्नासिंह और गंगा-
सिंने हरीरंगसें तन मन खूब रंगा ॥ गुरुगु-
ब्दीसिंह रातदिन उसी रंगमें रहे पगा ॥
उमरावसिंह बद्रीदत्तका घनघोर सभामेंचंग
बजा ॥ सुनके जनाना वो अपना निशान
कलगी छोड भगा ॥ शंभूदयाल कथ कहे
ख्याल हम ऐसी होली जमजम खेले ॥
कोई ना खेले० ॥ ४ ॥

ख्याल वसन्तका.

माशूकोंने जाफरानी ये अदा निकाली
वसंतमें ॥ पोशाख अपनी वो अपनी जर्द
रंगा ली वसंतमें ॥ टेक ॥ मांग हरेकने
गजब किया क्या जर्द भरा ली वसंतमें ॥
जर्द रुखोपे डाली काली घुंघराली वसंतमें ॥
चोटी छूटी कमरुंपे नागन जहराली वसंतमें
॥ भवें कमानी वो तानी अजब कमाली वसं-
तमें ॥ सागरे गुलगूमें वो मूल पीली वो पि-
लाली वसंतमें ॥ पोशाक अ० ॥ १ ॥ गूंचे

दहनने दंद गोहरपे मिस्सी जमाली वसंतमें ॥वो जेवदेती लबोंपे पानकी लाली वसंतमें॥ गुलूबंद गुलनार गुलाबी देख गुलाली वसंतमें ॥ हिनाकी सुर्खी लगी है साफ है लाली वसंतमें ॥ जला जला आशक अपने करती खुश हाली वसंतमें ॥ पोशाक० ॥ २ ॥ सैर करे बागोंमें यार देखें ये बहाली वसंतमें ॥ जर्द खिले हैं फूल क्या झूकी हैं डाली वसंतमें ॥ जर्द सभी दर दिवार हैं क्या चार दिवाली वसंतमें ॥ वसंती सब हैं दिलरुबा गर्द हवाली वसंतमें ॥ जर्द फूलके गूंथ झूमके डाले वाली वसन्तमें ॥ पोशाक अपनी० ॥ ॥ ३ ॥ जम्नासिंहके ख्याल बांकी घजके टकसाली वसंतमें ॥ गंगासिंगकी ये रंगत सांचे ढाली वसंतमें ॥ गुल्दीसिंने भरी सभामें वाहवा पाली वसंतमें ॥ उमराव बदरी बजाते चंग धमाली वसंतमें॥ संभूघालके ख्याल चले तुंपे ये सवाली वसंतमें ॥ पोशाक अपनी० ॥ ४ ॥

रंगत लंगडी सनत हैं.

लिखते लिखते हुए हैं बिसमिल अब क्या तेरा हाल लिखूं ॥ बस छोडके धंदा बैठ निर्भय हो तेरा जमाल लिखूं ॥ टेक ॥ अल्ला लिखूं या खुदा लिखूं या कादर लिखुं कमाल लिखूं ॥ कहो तो तुमको आज गजराजका दीनदयाल लिखूं ॥ रावण लिखूं या कुंभकर्ण या जरासिंध सिसपाल लिखूं ॥ इन दुष्टोंका कहो रिछपाल लिखूं या काल लिखूं ॥ हनमत लिखूं या सुग्रीव और मैं अंगद लिखूं अकबाल लिखूं ॥ बस छोड० ॥ ॥१॥ कृष्ण लिखूं गोपाल लिखूं या भक्तोंका प्रतिपाल लिखूं ॥ सुत देवकीका लिखूं या जसुधाका तुमे लाल लिखूं॥शाम कान विहारी लिखूं या राधेका सयाल लिखूं ॥ दिल हूं आहै है रामे रामै गोपी लिखूं या ग्वाल लिखूं ॥ सिंध लिखूं या सागर लिखूं समंदर लिखूं पाताल लिखूं ॥ बस छो०॥२॥ सिरपें

पडे लच्छेके लच्छे मैं रेशम लिखूं या बाल लिखूं ॥ जुल्फ केतई कहो जंजीर लिखूं या जाल लिखूं ॥ अबरू लिखूं या कमां लिखूं संसीर मिसर या ढाल लिखूं ॥ मिजगांके बालोंको कहो मैं तीर लिखूं या भाल लिखूं ॥ सानी लिखूं या सीना लिखूं या सूरत मूर्त बिसाल लिखूं ॥ बस छोडके वन्दा० ॥ ३ ॥ लछमन भारत जमनासींका मुल्कोंमें आज इक बाल लिखूं ॥ गंगासिंहको रहे हरवखत तुमारा ख्याल लिखूं ॥ गुन्दीसिं हरनामके आगे दुशमनको क्या माल लिखूं ॥ जुगला कुरडाके ख्यालकी नई निराली चाल लिखूं ॥ लिया लपक तुर्रेने कलगीका बोसां लिखूं या गाल लिखूं ॥ बस छोड०॥ ४ ॥

तिशर्फीबंद.

अरे दिलरुबा मत ना दे क्या है गाली गुफ्तारोसें ॥ बजूज दीदके तेरे नहीं देखे और दिदारोंमें ॥ टेक ॥ तूंही एक दिलबर

समझा है ऐ दिल्बर दिल्दारोमें ॥ सबूत इस्का येही है फिरते दरदर मारोमें ॥ जब आती हैं याद मुझे मै होता बिना करारोमें ॥ हक जाने है नही है तुझसा गुलगुल जारोमें ॥शेर॥ खुशनूमा दीखे तुही दिल्दार यारोंमें॥ दुरवंशा है खानेदारी खानादारोंमें॥जिक्र तेरा करते हैं सब यारगारोमें ॥ रातदिन मै सिर पटकता चाहगारोंमें ॥ तोड ॥ जबून है ये बात सनम रखा है क्या तकरारोंमें ॥ बजूज दीदके० ॥ १ ॥ सरासरी दम देता है क्या ठैरे तुम दम दमदारोमें ॥ शक मत समझो सनम हम है तेरे गंवारोंमें ॥ साबर हूं हरत रहन गिनते मारको तेरेमारोमें ॥ जामन किसको करूं तू जबर दस्त सर्कारोंमें ॥ ॥ शेर ॥ तौरकिशमाशूकका जाग मग-सारोंमें ॥ जुल्म तेगे निगहका तिल नहीं है जुल्फाकारोमें ॥ इश्कसें तेरे हुए हं दील फिगारोमें ॥ गश हुआ देखा तुझ जो

सितमगारोमें ॥ फुवा राखूं जिगर मेरा चल-
ता है खून फुवारोमें ॥ बजूज दीदके० ॥२॥
काफला तेरे हुसन नाजका चला जबके
तजारोमें ॥ कब खतीके थे मारे हमभी वर
सर्दारोमें ॥ गवाही गुजरे मेरी तेरी रोज
हशर इजहारोमें ॥ लग बजो होवे वो फेका
जाय अजा बुन्नारोमें ॥ शेर ॥ मिसरमें
पूंछो कोई गरई मसारोमें ॥ नहीं समझा है
तूने मुझको अपने यार प्यारोमें ॥ वस्ल
किस दिन होयगा हैं अश्कबारोमें॥हंस बोले
गा बुत किस दिना हम हैं कुफारोमें ॥तोड ॥
यही कहूं हरबार इश्कके फसा आन
गद्दारोमें ॥ बजूज दीदके० ॥ ३ ॥ जन्नासिं
मुर्शद मेरे क्या खूब है खुश तक्कारोमें ॥
गंगासिंहका नाम रोशन है वो दर्बारोमें ॥
गुर्दीसिंहसें सीख इल्म क्या बना फिरे
तरारोमें ॥ मकर जो करता हमने देखे है
वो मक्कारोमें ॥ शेर ॥ उमरावसींको ख्याल

ले परखा हजारोमें ॥ बदरीसिंह कहे ख्याल ये भंगके तरारोमें ॥ देख समीवे जो तू हो शरम सारोमें ॥ ख्याल मेरा पूछ ले जा इलमदारोमें ॥ शंभूसिंह कहे बात समझ क्या लेगा बद किरदारोमें ॥ बजूज दीदके तेरे नहीं देखे और दिदारोमें ॥ ४ ॥

रकारका ढंग.

रघुनंदन रसियोंके ध्यानमें रहते ईश्वर तुमी तो हो ॥ राम रमापत आप हो अलख अगोचर तुमी तोहो ॥ टेक ॥ राह ज्ञान बतलाने वाले वेद शास्तर तुमी तो हो ॥ रूम रूम में रम रहे दयाके सागर तुमी तो हो ॥ रही मरा हम करी मकादर पीर पयंबर तुमी तो हो ॥ ऋषिके संग जा मारते चुन चुन निश्चर तुमी तो हो ॥ राजा जनकने रचा स्वयंबर पौंचे रघुबर तुमी तो हो ॥ राम रमापत० ॥ १ ॥ रमे हुए हो घट घट अंदर रखते अंतर तुमी तो हो ॥ रटें रात दिन

नाथ सुर असुर केई सुर तुमी तो हो॥रघुनायक सुखदायक स्वामी अजर अमर हर तुमी तो हो ॥ रनमें निशाचरहते सबसें जोरावर तुमी तो हो ॥ रची रचना नाना प्रकारकी प्रभु गोपेश्वर तुमी तो हो ॥ राम रमा० ॥ २ ॥ रास किया ब्रजमें गोपियन संग सीस मुकट धर तुमी तो हो॥राधाके पत और देवकीके पुत्तर तुमी तो हो॥ रजसमान कर दिया इंद्र रख नखपर गिरवर तुमी तो हो ॥ रगडा पकडकर कंसको केंस पकडकर तुमी तो हो ॥ रुक्मनि जाय बरी कुंदनपुरमें नटनागर तुमी तो हो॥ राम रमा०॥३॥रसीले कवि गंगासिंजीकी मदत मुर्लीधरतुमी तो हो ॥ रूप प्रगट कर मारा पलमें दसकंधर तुमी तो हो ॥ रतनलाल कहे गुरुगुन्दीकी सहाय गिर्धर तुमी तो हो ॥ राजे रामके चंगपे निशान पुर जर तुमी तो हो ॥ रदीफ सुखतें कहनेमे पके बुधसिंजरगर तुमी तो

हो ॥ राम रमापत आप हो अलख अगो-
चर० ॥ ४ ॥

रंगत लंगडी.

जुल्फ दुता जिस वखात सनमने रूखोके ऊपर लटकाली ॥ काली बला है आशकों के तडफानेको पाली ॥ टेक ॥ होके मगन मन हरन माग संदूरसें जिस दंभ खाली ॥ अव रुकमाको तान एक अदा गुलबदन निकाली ॥ माहताब शरमिंदा हुआ जब देखी तेरी उजियाली ॥ चश्मोंको देखके वो उलटी पछाड आहूने खाली ॥ बीनीकों देख शर्माया सुवा घडी विधाताने ढाली ॥ काली बला है ॥ १ ॥ सजे नाकमें नत्थ तेरे मुखडेकी करतीर खवाली ॥ दो जुल्फे काली गालपर लटक रही है घुंघराली ॥ कोई ना छुवे बोसोंकोईस लिये सनम जुल्फे डाली ॥ दूरसें डस्ती नागनीकी तर ये सेज हराली ॥ कुचा गोल तेरी

प्यारी अंगियांमं छबिसे दबकाली ॥ काली बला है० ॥ २ ॥ मखमलको भीमात सिकम तेरा करे नाफ शोभावाली ॥ मिसाल जानूपरी रूको मल केले का डाली॥ मुंगफलीसी तेरी उंगली दे बहार मेंदीकी लाली ॥ नखसखसें सूरत तेरी बिधनानें सांचेमें ढाली ॥ कडी तोड ये पायलका झंझनाट सुन हो खुशहाली ॥ काली बला है० ॥३॥ ठंडी नज रसें हमारे ऊपर रहम करो ना मतवाली ॥ हम आशक तेरे समझ ले मन अपनेमे नख राली ॥ गुन्दीसिंह संभूदयाल बद्रीदत्तके सिरपें वाली ॥ जिनकी कृपासें ख्याल उमरावके वांके टकसाली ॥ राजे राम मंगतूंकी कथन सुन दुश्मनकी पिट रही ताली ॥ काली ब० ॥४॥

कबित्त.

पैसे बिन बाप कहे बेटा तो कपूत भया पैसे बिन भाई कहे मेरा दुखदाई ॥ पैसे

बिन जोरू कहे निखट्टसें काम पडा पैसे बि-नसास कहे काहेका जेबाई है॥ पैसे बिन यार बास बोले नाय भगनी खास पैसे बिन देवता करे ना सहाई है ॥ कहे हरिदास पैसा रखो पास पैसे बिन मुरदेको लकडी नाय पाई है ॥ १ ॥

हफ्तुजवान रंगत सिजल.

उठ आई सखी धरके सिरपें पानीका घडा॥ आगे जाऊं कैसे पनियां नंदका खडा ॥ टेक ॥ सखी हिंदकी जल भरने कैसे जाउं ठाढा पनघटमें गोपाल ॥ कहा कहूं वाने लूट लई सारी व्रजबाल॥ है अजब हठीला सखि नंदाजीका लाल ॥ कभी जाने नहिं देगा करे हालसे वेहाल ॥ झड ॥ कहा हकीकत कहूं नटखटकी ॥ पनहारन लूटी पन-घटकी ॥ लाखो वाने मटकी झटकी ॥ झट-क झटक जमनामे पटकी॥ तोड ॥ ऐसे बेदर्दी लालासे पाला आंन पडा ॥ आगे जाउं कैसे० ॥ १ ॥

सखी पंजाबकी.

हुंण मल्लों मल्लीआके काना मैनुं धमकां-
दा ॥ हारे फडके मेंडी बैयां मैनुं जोर दिख-
लांदा ॥ ये नंददा मुंडा जेडे मगरोंपैं जांदा ॥
नहिं जाने देंदा लेंदा साखिदाण मन भांदा ॥
झड ॥ जेडी सखी पनघटनुं जांदी ॥ जेडी
जांदी वो लुटके आंदी ॥ एक न मटकी सा-
बित लांदी ॥ लखों गाली उसकों ले खांदी ॥
किगलुस्दी गस्सां बडा दिलढा कडा ॥
आगे जाऊं० ॥ २ ॥

सखी पूरबी.

अरे लरकवा काहेको कर पकरत तह
मोरा ॥ का चीनत हमरा गात अहो नंदके
छोरा ॥ मै खूबी तरें जानत हुं जनियां हाल
कुल तोरा ॥ याहो पनघटवापे को तोरा
काहे निहोरा ॥ झड ॥ तोरी डराई ना मै
डरहुं ॥ बाराजोरी कर पनियां भरहुं ॥ लरे
तो तोरे संगमें लरहुं ॥ तोईको मारमें पीछे

मरहुं ॥ तोड ॥ बस छोडो हमरी बैयां सैयां काहेको अडा ॥ आगे जा० ॥ ३ ॥

सखी मारवाडी.

बोली मारवाडण प्यारी प्यारी कैयां जावे छे ॥ थारे लारे लारे नीसरा मुरारी आवे छे ॥ ना जानुं प्यारो मुरलीमें कांई गावे छे ॥ मिरघानैणीरां ढोला म्हांका जी ललचावे छे ॥ झड ॥ थेहोजी हो नंदजीरा छैल ॥ छोडो लालजी ह्यांकी गैल ॥ टूक तो जुलमी परे टहल ॥ जावोजी करो जमनारी सैल ॥ तोड ॥ के तोथे हट जावो ना म्हें मारां गी छडा ॥ आगेजा० ॥ ४ ॥

सखी हरियाणा.

हंबें ये सखीयो काना बडा चंचल सैं॥ मिलतेही मारे नैणना जानुके अटकल सें॥ ऐं छलियाराकी पोरी पोरी मैं छल सै ॥ मतयाण येने जानो यो तो बडा अपर-बल सें ॥ झड ॥ मैं तो सखी थी बाली भोली ॥ इन ठाडमदावे भर लई कोली ॥

देख सखी मै हो गई घोली ॥ लई भाजके अपनी पोली ॥ तोड ॥ ह्मारा देस हरयाण योस गोकलका गगडा आगे जाऊं० ॥ ५ ॥ हिरवाटी मुने कह दे साची साची कनयां ले चालागो केठे ॥ देखूगी कैदा तूं मुने ले चालागो बेठे ॥ जागै लेगै ले चालो तूं क्यों खडोसा ऐठे ॥ के देखा साजा डोल तेरो मनमाने जैठे ॥ झड ॥ बीरा एक नामा तूं ऐंकी ॥ मानुना जायो साजैंकी ॥ मै चोटी काटीकै की भूली ना बोली तू तैंकी ॥ तोड॥ मै उलाडीनें आंऊं ह्मारा छोडाना कपडा ॥ आगे जाऊं पानियां० ॥ ६ ॥

सखी दिल्लीकी.

मुश्ताक दिल हुआ सुनके मुशफिक प्यारीकी गुफतार ॥ खिल खिल गुंचेके मानिन्द दिया सखियोंको दिदार ॥ मालुम हुआ लालाको हैं दिल सखियोंका सरसार ॥ ये चौक उर्दू देहलीका कहे गंगासिह ललकार

॥ झड ॥ देवीदत्तकी सात जबानी ॥ भोलू सिंगातें सैलानी ॥ गनेसी सिंहै नुकतादानी ॥ हुऐ मात सुनके दहकानी ॥ तोड ॥ कहे अलख धारी प्यारी ब्रजनारीका झगडा ॥ आगे जाऊं पानियां० ॥ ७ ॥

ख्याल संस्कृतका, बहुत उमदा सनतदार दाखला.

नमामि शंभुं भजामि विष्णुं प्रजापतिं चात्यनन्यचेता ॥ ददातु सर्वं सनाप्रियं मे कृपासरस्वान् कृशानुरेता ॥ अहर्दिवं ये तु नमंति देवं वृषेंद्रवाहं फणींद्रहारम् ॥ सुयोगगम्यं चिदेकरूपं पिनाकपाणिं हि निर्विकारम् ॥ विनष्टशंका विधूतपापा भवांबुधेस्ते व्रजंति पारम् ॥ मृगांकमौलिं मनोजशत्रुं जगद्विचित्रं वदंत्यसारम् ॥ यदंघ्रिपद्मं सचिंत्यमूढो भवेत्सुबुद्धिस्तथा सुचेता ॥ ददातु सर्वंसनाप्रियंमे ॥ १ ॥ भजध्वमंघ्रिद्वयं तु विष्णोर्जगद्धितं यः सदा चकार ॥ गवां

व्रजेभ्यो हिताय नूनं स्वकीयपाणौ गिरिं दधार ॥ दनोः सुतानां बृहब्दलानां महाभिमानं तु संजहार ॥ स्वभक्तियुक्तान् विशुद्धचेतान् विनम्रमूर्तान् प्रभुः पपार ॥ स्त्रवीति खं भूस्तथैव वायुः कृपीट योनिस्स्वयं प्रचेता॥ ददा० ॥ २ ॥ पुरैव दध्यो समस्तवेदान् युगांत अंतर्हितान् विधाता ॥ हिरण्यगर्भश्चतुर्मुखो यः सदैव नृभ्यो वरं प्रदाता ॥ तथामरेभ्यो दितेः सुतेभ्यो हि पक्षपातं विहाय धाता ॥ भवेन्न दुःखी कदापि नित्यं विधेर्गुणान् यो नरः प्रगाता ॥ स्तुवंति देवा महर्षिसंघाः सुरर्षिवृंदाः समीप एता ॥ ददातु सर्वं सना० ॥ ३ ॥ त्रिदेवनूतिं य एक चेता अहर्निशं वै पठेदविद्वान्॥ विनष्टशंका विधूतपापा निधिर्भवेन्नासशेमुषीमान् ॥ लभेत जायां पुनः सुपुत्रं कुटुंबवृद्धिशरीरभोगान् ॥ श्रयामि नाम्ना जितादिदेवो पुनः पुनर्वै मुनींश्च सर्वान् ॥ शिवं शरण्यं हरिं विरंचिं भवंति

मुक्ता नरा उपेता ॥ ददातु सर्वे सना० ॥४॥

सखी दौड.

काया जमीमें बीज निर्मल थी लगाना चाहिये ॥ मूल विद्या जिस्के लगता उस्को पाना चाहिये ॥ फिर लियाकत ज्ञान बोध उस्की ये टहनी तीन है ॥ शाख है षट् शास्त्र फिर उनको छाना चाहिये ॥ गौर गुल उस्के लगे गागर मिले सद्गुरु कोई ॥ बादमें फिर शायरी फल उस्के आना चाहिये ॥ सुख न मेरा है अमर फल तूं समझ अहले सखुन ॥ लज्जत इस्की पानेको आलीम वो दाना चाहिये ॥ इल्म दर्यामें लहर आई सजर मैने सींचा भाई॥ आज्ञा गुरुगुन्दीसींकी पाई दौड उमरावसींने गाई ॥ छंद शंभूका सजीला है ॥अदू सुनके हुआ ढीला है ॥ १ ॥

ख्याल रंगत बैरेतबील.

दिल जाता रहा नहीं हाथ रहा जबसे मैंने तुझको है देखा खडा ॥ मुझे दिन दुनी-

की खबरन रही बेहोष हुआ तेरे दरपे पडा ॥टेक॥तुजे जान हमारी जो लेनी ही थी तैंने हमसें कहा न कबी ये जरा ॥ तेरी जान हमे दरकार मियां तूं तो अनाह मारे वो महल सरा॥ तकदीरने यारीये की है सनं मुझको जो मिला है ये दीद तेरा ॥ तेरा दम तो मै हरदम भरता रहूं ॥ जानी तेरे दरपे पडा हूं मरा ॥ हूं रोगी लमाखा हम है तेरे मुझको नहीं कोइ है दिखे बडा ॥ मुझे दीन० ॥ १ ॥ तेरे नामसे हमको है काम फकत और दूसरा रखते नहीं हम दम ॥ एक दिल तो मेरा है ये तुझसें लगा नहीं औरसे लगता लगत दिलकी कसम ॥ महफिलमें तेरे ऐ माहेलका लडते हैरकी बोसें तेरे चशम ॥ मुझे दिया जला नहीं वाकी रहा हं पेतो हूंआ हे ये तेरा करम ॥ मैंने जान तो है कुर्बान करी जबसें तुझे देखा हैं कोठे चढा ॥ मुझे दिन० ॥ २ ॥ तेरी मारसें डरते न यार जरा

खुदा तूं देगि लखन मेंरो यार जला ॥ अब तेरा तो दिलबर होई चुका मुझे खाकमें रवा मिठीमें मिला॥जब दफत रोज हशरके खुले नहीं होवेंगा यार व्हां तेरा भला ॥ तैंने मारके आशक रवार किये फिरता है बना मचला मचला ॥ देखे है सगी दिल बींधने पर तुझसा न देखा है कोई कडा॥मुझे०॥३॥ लछमन भारत जन्मासिंह कहैं गंगासींह मुल्कोमें नाम करा ॥ देखो संडा खलीफा क्याख्याल कहे बादीको ये दे ताजबा बखरा ॥ उमरावके ख्याल सुने दुश्मन सुनके वो तो जाता हैं दुमको चुरा ॥ बदरी दत्तकी है ये शिरी जवां सुने यार जोई हो जावे हरा॥ ये तू ख्याली क्या गावेगा खाक गुनी शंभूने वो ज्ञानकुं फल है जडा ॥ मुझे० ॥ ४ ॥

सखी दौड.

गौरीपुत्र गनेश आजमे तुमे मनाऊं॥
दो मारग बतलाय ग्यान भूलन नाहिं पाऊं॥

उंचेपे अस्थानसे हरसे तुरा गाऊं ॥ करु दुशमन पमाल कलगीको फड मन चाऊं॥ घोंसा प्रथम गनपती मनाता हूं॥ मेहरसे तुर्रा मगाता हूं॥हुकुम गंगासींका पाता हूं॥ भरी मफलाको सुनाता हूं॥ न समझो किसी बातसे कम॥श्यागीर्द गंगासिंघके हम ॥१॥

सखीदौड.

क्या देखी तेरी नेकी मदिल मशगुल हूं वाजी॥ जो बदी मबद कहलाया वोना मोकुल हूवा जी॥ क्या कीरोडी मल फूलूं मअजाप बफुल हूवा जी॥ जो धुलसे पैदा हूवा अंतको धूल हुवा जी॥ घोंसा अरे नर तज कर मान गुमान॥धर हरिचरननसेती ध्यान॥ अरे मन यकीन कर के जान ॥ भजन करनेसें मिले भगवान ॥मेरे गुरु गंगासिंघ बरदे॥मारलुं दुशमनकी नरदे॥१॥ शहर भिवानीका है रहनेवाला ॥सुन नाम चिरंजीलाल बडा मतवाला ॥टेक॥ अव्वलसें हकीकत कहता हूं मै सारी ॥ है कोम महा-

जन जहन जिस्का भारी ॥ गुजराती भाटि-
योंसे है जिसकी यारी ॥ देते हैं हाजरी
दुलाल आके न्यारी ॥ है किसमतका बली
अकलका आला ॥ सुन नाम चिरंजी० ॥१॥
कहते हैं सत्य नहीं समझ अमिथ्या राई ॥
करता है दलाली गल्लेकी सुन भाई ॥ सब
दुकान दारोंके मुखसें सुनी बडाई ॥ है चिरं-
जीलालके रती नहीं गुमराई ॥ फिर खूब
तरहसें हमने देखा भाला ॥ सुन नाम० ॥२॥
है अकलमंद हुशियार बडा वो ज्ञानी ॥ क्या
जबान शिरी कोमल जिसकी वानी ॥ रहे
मदतपे जिसके हरदम आप भवानी ॥ लख
प्रताप जिसका दुश्मन खाते कानी ॥ है चं-
चल बडा शौकीन रंगीला लाला ॥ सुन
नाम० ॥ ३ ॥ पहछान चिरंजीलाल बडा है
दाना ॥ बडे बडे अमीरोंके मनमैं वो माना ॥
मुंबई शहरमें जिस्का पता ठिकाना ॥ लिखुं
मेहेरबानकी चालीमें जिस्का थाना ॥ कर

मुंबादेवी जन अपनेकी प्रतपाला ॥ सुन नाम चिरंजी० ॥ ४ ॥ सवैया ॥ ध्यानकी कमान बांधुं बुधी तरकस तीर ग्यानके तुरंग चढ ब्रह्मलोक ध्याये हें॥धीरज लगाम क्षमा पाषरे बराग जीन सजमके पांवरेपें पांव ठराये हें ॥ कवच बिचार प्रेम चावक बीबेक टोप सीलहूकी ढाल सीस फूल हू लगाये हें ॥ कह हरीदास हरिनामको खडग हाथ ऐसे असे वार देख कालहू डराये हें॥१॥ ॥ सवैया ॥ लाज तह हरीके गुन गावत नेरोही काम सभी बिगरेगो ॥ लोक कुटंब-की प्रीत मुसानलो आग नहीं डग एक धरेगो॥ दास हरी दुखको न बटावत वाही समे जम देख डरेगो॥ राम भजेन सभी तज मूरख लाजहि लाजमै नरक परेगो॥ २॥

समाप्त.

पुस्तकें मिलनेका ठिकाना–गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,
"लक्ष्मीवेंकटेश्वर" छापाखाना, कल्याण–मुंबई.

नूतन पुस्तकोंकी जाहिरात.

मारवाडीभाषाके ख्याल ।

१	ढोलसुलतानन्द्यालदेको ख्याल	०—४	०—॥
२	सहजदेकाबडा ख्याल झालीरामकृत	०—३	०—॥
३	द्रौपदीका ख्याल*	०—३	०—॥
४	राजारीसालू नोपदेको ख्याल*	०—३	०—॥
५	दयारामधाडवीकोख्याल प्रल्हादीरामको बनायो	०—३	०—॥
६	सहाजादाको ख्याल प्रल्हादीरामकृत	०—३	०—॥
७	नौरङ्गसाहशिवराजबलीको ख्याल	०—४	०—॥
८	शिवीराजाको ख्याल*	०—४	०—॥
९	गोपिचन्दको ख्याल*	०—२	०—॥
१०	सुलोचनाको ख्याल	०—२	०—॥
११	मोरध्वजकी लावनी	०—१॥	०—॥
१२	विधवादुर्दशा नाटक	०—२	०—॥
१३	वूढवालमका ख्याल	०—२	०—॥
१४	निरधुन्धका ध्यान	०—१॥	०—॥
१५	नागोरी छेलाको ख्याल	०—२	०—॥
१६	राधाकृष्णपंचांग	०—७	०—१
१७	शिवतांडव भाषाटीका	०—२	०—॥

१८	श्रीगुसाईंतुलसीदासकृत षोडश रामायण	२—०	०—४
१९	ब्रजविहार-वृन्दावनवासी श्रीनारायण स्वामीजीकृत....	२—०	०—४
२०	विज्ञानगीता कविकेशवदासकृत	०—८	०—१
२१	आल्हारामायण लंकाकांड (राम रावणकी लड़ाई)	०—८	०—१
२२	अर्बुदमाहात्म्य भाषाटीका (अबुपहाड़के तीर्थोंका माहात्म्य नकूशा सहित)	०—५	०—॥
२३	रामाश्वमेध केवलभाषाश्लोकांकस.	२—०	०—६
२४	राजवल्लभ निघण्टु भाषाटीका	१—८	०—२
२५	ग्रहलाघव भा० टी०	१—४	०—२
२६	श्रीकृष्णाष्टक सटीक.........	०—१	०—॥
२७	लघुकौमुदी भा०टी०अतिउत्तम	२—०	०—४
२८	विनयपत्रिका सटीक ग्लेज...	२—८	०—४
२९	,, ,, रफ ...	२—०	०—४
३०	अन्वयप्रबोध	०—२	०—॥
३१	अश्वधाटी काव्य भा० टी० ...	०—४	०—१
३२	सुदर्शन शतक संस्कृत	०—३	०—१
३३	हनुमद्बंदीमोचन	०—१	०—॥

३४	मृत्युसभा नाटक	०—२	०—॥
३५	लघुजातक भा० टी०	०—८	०—१
३६	पद्मकोश भा० टी०	०—४	०—१
३७	सभापत्रिका	०—१	०—॥
३८	जीवन्मुक्त गीता भा० टी० ...	०—१	०—॥
३९	रामगंगा माहात्म्य भा० टी० ...	०—२	०—॥
४०	मुक्तिकोपनिषद् भा० टी० ...	०—५	०—१
४१	कैवल्योपनिषद् भा० टी० ...	०—१	०—॥
४२	देव्यपराधक्षमापन स्तोत्र भा० टी०	०—१	०—॥
४३	रामकृष्ण माहात्म्य...	०—३	०—॥
४४	विषचिकित्सादर्पण...	०—४	०—॥
४५	गीतामृतधारा भाषा, ...	०—८	०—१
४६	मोक्षगीता बडी सवालक्ष रामनाम	१—०	०—२
४७	संध्या भा० टी०...	०—१॥	०—॥
४८	सांगीत शकुंतला नाटक ...	०—८	०—१
४९	सतनामाकरस्तोत्र	०—१	०—॥
५०	आल्हारामायण (आरण्यकांड)	०—६	०—१
५१	गीतारामानुज-भाष्य.... ...	२—०	०—४
५२	दादुरामोदय दादुपंथी साधुओंका	०—१०	०—१
५३	अशौचनिर्णय भा० टी० ...	०—४	०—१

५४	सुश्रुत संहिता भाषाटीका चित्र सहित टपालहाशिल माफ की०	१०—०	०—०
५५	शिक्षादर्पण कलकत्तेका ...	१—१०	०—४
५६	शिक्षामणि कलकत्तेका ...	२—०	०—४
५७	अभिलाखसागर वेदांत	२—०	०—४
५८	स्वरतालसमूह (सितारका पुस्तक)	१—८	०—२
५९	बालबोध व्याकरण	०—२	०—॥
६०	बालोपकारकसुलभ गणित ...	०—२	०—॥
६१	बारामासीया लावणीसंग्रह.......	०—५	०—॥
६१	मूर्खशतक-निंदकनामा	०—४	०—॥
६२	जीवनचरित्र तुलसीदासजीका...	०—८	०—॥
६३	विष्णुसहस्रनाम गुटका भा०टी०	०—४	०—॥
६४	पंचरत्न गीता गुटका भा०टी०	१—०	०—२
६५	रमल भास्कर हिंदीभाषामें......	०—४	०—१
६६	नित्यतंत्र भाषाटीका	०—१२	०—१
६७	प्रेमप्रवाह	०—२	०—॥
६८	गोपदेशचंद्रिका	०—१॥	०—॥
६९	गूजरगीत मंगल...........	०—५	०—१
७०	गोविंदगुणवृन्दाकर.........	१—०	०—॥
७१	रामराज्यनित्यवर्णन दोहा ...	०—१	०—॥

७२	पुरुषसूक्त भा० टी०	०—२	०—॥
७३	वृन्दावनशतक	०—२	०—॥
७४	वृन्दावनविलास	०—१	०—॥
७५	श्रीबदरीनारायणस्तोत्र	०—३	०—॥
७६	दारिद्र्यमोचनाष्टक	०—१	०—॥
७७	गोविंदनामगीता	०—८	०—१
७८	पदावली भाषा	०—३	०—॥
७९	गिरधरकुण्डलिया	०—४	०—॥
८०	परतन्त्रनिर्णय	०—१	०—॥
८१	केवल गीता भा०टी०पाकेटबुक	०—८	०—१
८२	श्रीरामानुजातिमानुषवैभवस्तोत्र	०—३	०—॥
८३	श्रीरङ्गनाथडोलोत्सवस्तोत्र	०—१	०—॥
८४	ब्रह्मज्ञान प्रदीपिका मथुराका	१—८	०—४

पुस्तक मिलनेका ठिकाना—

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,

"लक्ष्मीवेंकटेश्वर" छापाखाना

कल्याण-मुंबई.

सविनयं सूच्यते.

संस्कृतादि पुस्तकप्रकाशक-" लक्ष्मीवेङ्कटेश्वर " नाम मुद्रणयन्त्रमें संस्कृत तथा भाषाटीकासहित अनेकानेक ग्रन्थ जैसे-वैदिक, वेदान्त, पुराण, धर्मशास्त्र, काव्य, न्याय, व्याकरण, छन्द, नीति, चम्पू, नाटक, स्तोत्र, वैद्यक, स्मृति, कोष, इतिहास, श्रीरामानुजसाम्प्रदायी तथा हिन्दी भाषाके सब रकम ग्रन्थ सर्व काल विक्रयको तयार रहते हैं जो अन्यत्र नहीं मिलसक्ते खुलापत्राकार तथा किताब सपुष्ट रेशमी विलायती चित्रित जिल्द बँधी है पुस्तकोंकी रचना और शुद्धता इस छापेकी उत्तम है कि देखनेसे चित्त प्रसन्न हो जाय, जिनका दूसरा सूचीपत्र है. आध आनेका टिकट भेजनेसे शीघ्र रवाना होता है.

पुस्तकें मिलनेका ठिकाना-

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,

" लक्ष्मीवेंकटेश्वर " छापाखाना,

कल्याण-मुंबई.